चेतना के स्वर
सुधा आदेश

समर्पण

मेरी सृजन यात्रा में
जाने अनजाने
जो भी परिचित अपरिचित
साथ चले, सहयोगी बने
उनको शत-शत नमन...।

अपनी बात

लेखन मेरी आत्मा है, जीवन की साधना है, समाज में छाये विरोधाभास से उत्पन्न वेदना है... आज के भौतिकतावादी, निज संस्कृति को नकारते तथा पाश्चात्य संस्कृति की ओर दौड़ते, अनाचार, दुराचार भ्रष्टाचार के कोलाहल में लिप्त संवेदनहीन जनसमाज को देखकर मन की अनुभूतियों ने जब–जब भी ली करवटें, मन के चादर पर पड़ती गई सलवटें, सहेज कर उन्हें उकेरती गई... सृजन का यह अनोखा आनंद दुनिया भर की टूटन, घुटन, संत्रास और आक्रोश से मुक्ति दिलाने लगा, लिखना जिजीविषा बनती गई... इसी जिजीविषा की खातिर न जाने कितने पन्ने रंग डाले शायद दिल में जब कुछ टूटने, बिखरने लगता है, शब्द मुखर नहीं हो पाते तब लेखनी स्वयं चल पड़ती है, नई सोच के संग, नई दिशा की ओर और उदित हुई मेरी अनेकों रचनायें...।

यह सच है कि मैं अपनी रचनाओं को वैसा नहीं गढ़ पाई जैसा चाहती थी पर संतोष है तो सिर्फ इतना कि वैचारिक स्तर पर मैं ने संपूर्णता प्रदान करने का प्रयास अवश्य किया है शायद संपूर्णता प्रदान करना किसी के लिए भी सम्भव नहीं है अगर ऐसा कोई कर पाता है तो वह संतुष्टि रूपी तालाब की मृगमरीचिका में फंसकर रह जाता है ।

लेखक का काम है लिखना, उसको पहचान देना पाठकों का... इस संकलन का एक–एक पन्ना सुधी पाठको को इस आशा के साथ समर्पित है कि टूटी संवेदनायें फिर जुड़ेंगी, चतुर्दिक दिशाओं में व्याप्त घृणा द्वेष के मेघ तबाही मचाने के बजाय सावन की रिमझिम बूँदों की तरह बरस–बरस कर धरा को प्रेम और सद्भाव से सराबोर कर देंगे...।

चेतना मनुष्य का वह नैसर्गिक गुण है जो उसे सही–गलत, अच्छे–बुरे

और सुख-दुख के एहसासों से परिचय ही नहीं करवाता है वरन् उसे जड़ से जीवन की ओर उन्मुख करता है... सच तो यह है जिसमें चेतना नहीं, संवेदना नहीं वह मनुष्य होकर भी मृत के समान है... इन्हीं भावों को लेकर अपना प्रथम काव्य संग्रह 'चेतना के स्वर' आपके पास लेकर आ रही हूँ, उस असीम शक्ति की वंदना के साथ...।

मेरी सृजन यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है, पुनः शीघ्र ही मिलेंगे... अपनी बात का समापन अपनी ही निम्न पंक्तियों से करना चाहूँगी...

दिलों में बंद आक्रोश
जब निकलेगा
तो चिंगारी तो उड़ेगी ही,
अब तुम जलो या मैं
फर्क क्या पड़ता है ?

जय हिन्द, जय भारत

सुधा आदेश

अनुक्रम

1. वंदना 9
2. चेतना के स्वर 11
3. माँ 13
4. जीवन का सच 15
5. महादान 17
6. मेरा भारत महान 18
7. वीर की कामना 20
8. नियति 22
9. संवेदनहीनता 26
10. जीवन का गान 28
11. आस अभी बाकी है 29
12. कैसा है बचपन... 31
13. जिंदगी 32
14. पलों का नाम है जिंदगी 33

15. सजा क्यों ... .
.....34
16. अपेक्षा .....
.....36
17. अनमोल रत्न .....
.....37
18. साच्चा सौन्दर्य .....
.....39
19. मुखौटा .....
.....40
20. भाव कहीं खो गये हैं 41
21. संभावना .....
.....43
22. एवन् सच .....
.....45
23. मेरा गाँव मेरा शहर 47
24. हिन्दी दिवस .....
.....49
25. यह कैसा जनतंत्र है 51
26. तुम कौन हो ! 54
27. मृगमरीचिका के पीछे 56
28. विदाई 57
29. लौट आओ 61
30. सभ्य दुनिया के सभ्य यमदूत 63

वंदना

हे परम ब्रह्म परमेश्वर !
तुम...
अनंग हो,
अजेय हो,
अविनाशी हो,
अकामी हो,
इस विशाल सृष्टि के प्रणेता हो,
अनोखे विश्व के नियंता हो...।

हे त्रिकालज्ञ !
तुम...
आदित्य हो,
अंतरयामी हो,
अजर हो,
अनंत हो...
तुम्हारी अनंतता की कोई सीमा नहीं
मानव के लिये तुम रहस्यमय हो...।

हे कमलेन्द्र !
तुम...
सर्वव्यापक हो,
निर्पक्ष हो,
उद्धारकर्त्ता हो,
तिमिरभिद् हो,
रात–दिन तुम्हारी इच्छा का परिणाम है
निःशक्त को तुम सशक्त बनाते हो...।

हे चक्र त्रिशूलधारी !
तुम...
अगोचर हो,
निराकार हो,
विघ्नहर्त्ता हो,
ऋद्धि–सिद्धिदाता हो,
जन–जन के प्यारे–न्यारे आदिदेव
तुम देवताओं द्वारा भी प्रणुत हो...।

***

चेतना के स्वर